

पंचम अध्याय

शोध सार

अध्याय पंचम शोध सार

5.1 प्रस्तावना -

सारांश किसी भी अध्ययन को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सकता है। इस अध्याय में लघु शोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिये गये प्रदत्तों का विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या कथन -

प्रस्तुत शोध की समस्या को निम्नलिखित प्रकार से शब्दांकित किया गया है -
“कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों की गणित विषय में रुचि एवं गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन”

5.3 शोध अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य बनाये गये हैं, जिससे शोध में प्रयुक्त चरों के मध्य सहसंबंध को ज्ञात किया जा सका है। इससे विशेष जानकारी प्राप्त करने में शोधार्थी को सहायता मिली है-

- विद्यार्थियों में गणित विषय में रुचि का मापन करना।
- विद्यार्थियों में गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करना।
- विद्यार्थियों में गणित विषय में रुचि तथा गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

5.4 परिकल्पना -

प्रस्तुत शोध की निम्न परिकल्पना है-

- गणित विषय में रुचि तथा गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध है।

5.5 समस्या का सीमांकन -

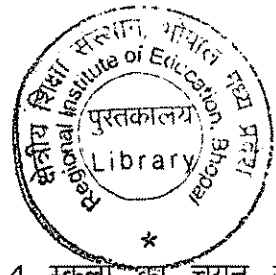
अध्ययन का परिक्षेत्र-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समय-सीमा को ध्यान में रखते हुए शोध हेतु मध्यप्रदेश राज्य के भिण्ड शहर के 4 शासकीय विद्यालयों को शामिल किया गया। शासकीय विद्यालयों की 9वीं कक्षा को न्यादर्श में लिया गया। चूँकि शोध भिण्ड शहर के 4 शासकीय विद्यालयों तक सीमित है। अतः प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। प्रदत्तों के संग्रहण के लिए एल.एन. दुबे द्वारा निर्मित गणित अभिरुचि मापनी का प्रयोग गणित विषय में रुचि के लिए एवं विद्यार्थियों के छमाही प्राप्तांक को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। अतः शोध यहीं तक सीमित है।

5.6 न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन -

वृहद समष्टि की सभी इकाइयों का अध्ययन करना अनेक कारणों से प्रायः सम्भव नहीं होता। उस स्थिति में इकाइयों के एक छोटे समूह का ही अध्ययन करना पड़ता है यदि समूची वृहद समष्टि का अध्ययन संभव हो भी तो भी ऐसा करना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है क्योंकि उसमें बहुत अधिक समय धन एवं शक्ति का व्यय होता है और लाभ बहुत अधिक नहीं होता। थोड़ी सी त्रुटि के साथ वैसे ही परिणाम समष्टि के छोटे समूह को लेकर भी प्राप्त किये जा सकते हैं और समय, धन एवं शक्ति के अधिक व्यय को बचाया जा सकता है।



प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन के लिए भिण्ड शहर के 4 स्कूलों का चयन उद्देशीय प्रतिचयन पद्धति से किया गया है। जिसमें 2 शासकीय एवं 2 अशासकीय विद्यालयों को लिया गया है। प्रत्येक स्कूल में कक्षा 9वीं से 25-25 विद्यार्थियों को व्यवस्थित प्रतिचयन पद्धति द्वारा चुना गया है।

5.7 शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण -

अनुसंधान समस्या समाधान की प्रक्रिया है। इसका आधार परिकल्पनाओं का निर्माण एवं उनका परीक्षण होते हैं। परीक्षण हेतु साक्ष्य एकत्रित किये जाते हैं। ये साक्ष्य ही अनुसंधान की आधार सामग्री कहलाते हैं। इन साक्ष्यों को एकत्रित (संग्रहण) करने के लिए हमें उपकरण एवं तकनीकी की आवश्यकता होती है।

एल.एन. दुबे गणित रुचि मापनी :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के संग्रह हेतु एल.एन. दुबे (2006) द्वारा निर्मित गणित रुचि मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी के विश्वसनीयता गुणांक का मान k.r. formula से .89 है। यह मापनी 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त है।

गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के संग्रह हेतु विद्यार्थियों के विगत परीक्षा में प्राप्त गणित विषय के प्राप्तांकों को लिया गया है।

5.8 प्रदत्तों का संकलन -

प्रदत्तों के संकलन हेतु क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा दिये गये अनुमति पत्र को चयनित विद्यालयों के प्राचार्य को दिखाया गया, शोधकार्य से उन्हें परिचित कराया गया और आधार सामग्री संग्रह हेतु अनुमति ली गई है। तत्पश्चात् कक्षा 9वीं से न्यादर्श का चयन किया गया है।

गणित विषय में रुचि का मापन-

गणित विषय में रुचि के मापनके लिए न्यादर्श चयन के पश्चात् गणित रुचि मापनी को

न्यादर्श पर प्रशासित किया गया है। गणित रुचि मापनी के प्रशासन से पहले उन्हें मापनी से परिचित कराकर सामान्य निर्देश दिये गये है और परीक्षण सम्पन्न हो जाने के पश्चात् सभी विद्यार्थियों से उत्तर पत्र ले लिये गये। अन्त में सभी विद्यार्थियों को धन्यवाद दिया गया है।

गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि-

गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के लिए छात्रों के अर्द्ध-वार्षिक परीक्षा के गणित विषय में प्राप्तांकों को कक्षाध्यापक से प्राप्त किये गये हैं।

5.9 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ -

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु कार्ल-पियर्सन की प्रोडक्ट मूमेण्ट मेथड का प्रयोग किया गया। जिसमें माध्य का प्रयोग किया गया है।

5.10 शोध निष्कर्ष -

प्रस्तुत शोध से निष्कर्ष निकलता है कि गणित विषय में रुचि तथा गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य मध्यम धनात्मक सहसंबंध है अर्थात् विद्यार्थी की गणित विषय में रुचि जितनी अधिक होगी उसकी गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि भी उतनी अधिक होगी।

5.11 सुझाव-

शिक्षकों के लिए-

- विद्यार्थियों की गणित विषय के प्रति रुझान पैदा करने की पहल करना।
- विद्यार्थियों के स्तर, रुचि को जानते हुये अपनी समय सारणी में विभिन्न खेल, पेहेली एवं गतिविधियों को पर्याप्त ध्यान दें ताकि बच्चों में गणित विषय के प्रति भय को कम तथा उनकी रुचि विषय के प्रति बढ़े।

- गणित का शिक्षण बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़कर कराएँ तो विषयवस्तु में उनकी रुचि बढ़ेगी तथा वे व्यावहारिक व स्थायी गणित सीखेंगे।
- विद्यार्थियों के आसपास घटित हो रही समस्त गतिविधियों से यदि शिक्षक गणित का जुड़ाव करने में सफल होते हैं तो बच्चों का रुझान बढ़ना स्वाभाविक होगा।
- गणित और अन्य विषयों को जोड़कर शिक्षण कराना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव-

- समस्या समाधान योग्यता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन।
- सामाजिक व आर्थिक स्थिति का गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।
- शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की गणित विषय के प्रति रुचि का अध्ययन।
- शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा छात्रों की गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन।